International Indexed & Referred Research Journal, March, 2012. ISSN- 0975-3486, RNI-RAJBIL 2009/30097;VoL.III *ISSUE-30
शोध पत्र- संगती एवं नृत्य
March, 2012

चन्दवरदायीकृत 'पृथ्वीराज रासो' में सांगीतिक तत्त्वों का विवेचन

* गुंजन मित्तल

* शोधार्थी, संगीत एवं नृत्य विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

चन्दवरदायी (संवत् 1225–1249) हिन्दी के प्रथम महाकवि माने जाते थे और इनका पृथ्वीराज रासो इतिहास की पृष्ठभूमि पर निर्मित वीर रस से परिपूर्ण एक विशाल प्रबन्ध काव्य है। चन्द दिल्ली के अन्तिम हिन्दू सम्राट महाराज पृथ्वीराज चौहान के सामंत और राजकवि थे। रासो के अनुसार ये भट्ट जाति के जगात नामक गोत्र के थे। इनके पूर्वजों की भूमि पंजाब थी जहां लाहौर में इनका जन्म हुआ था। कवि चन्दवरदाई और महाराज पृथ्वीराज चौहान का जन्म एक ही दिन हुआ था और दोनों ने एक ही दिन इस संसार से विदा ली। ये महाराज पृथ्वीराज चौहान के राजकवि ही नहीं बल्कि उनके सखा और सामंत भी थे तथा षड्भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छन्दशास्त्र, ज्योतिष, पुराण, नाटक आदि अनेक विधाओं में परांगत थे। इन्हें जालंधरी देवी का ईष्ट था जिनकी कृपा से ये अदृष्ट काव्य भी कर सकते थे। इनका जीवन पृथ्वीराज के जीवन से ऐसा मिला–जुला था कि अलग नहीं किया जा सकता। युद्ध में, आखेट मे, यात्रा में, सदा महाराज के साथ रहते थे और जहां जो बातें होती थी, उन सब में इनको सम्मिलित किया जाता था।[1]

पृथ्वीराज रासो ढ़ाई हजार पृष्ठों का एक विशाल ग्रन्थ है जिसमें 69 समय (सर्ग या अध्याय) है। इस ग्रन्थ के रचनाकाल के सम्बन्ध में बहुत से मतभेद हैं। कुछ लोग रासो को बहुत प्रचलित मानते हैं और उसे 12वीं शताब्दी का घोषित करते हैं।[2] कुछ एक दृष्टि से इनकी रचना सम्वत् 1400 के लगभग मानी गई है, इससे पूर्व नहीं[3] तथा कुछ लोग रासो को नवीन तथा 16वीं शताब्दी या उसके बाद की रचना मानते हैं जो लोग इस ग्रन्थ को प्राचीन एवं प्रचलित मानते हैं, उस दल के प्रमुख नेता कर्नल टाड, गार्सां द तासी; एफ.एस. ग्राउज, जॉन बिम्स, रूडोल्फ हार्नली, जार्ज अब्राहम गियर्सन, मोहन लाल विष्णु लाल पाण्डया, मिश्रबन्धु, डॉ. श्यामसुन्दरदास, मथुरा प्रसाद दीक्षित तथा अगरचन्द नाहटा जी हैं तथा जो लोग इसको नवीन व आधुनिक मानते हैं। उस दल के प्रमुख नेता कविराज श्यामलदास, डॉ. बूलर, जेम्स मॉरीसन, मुन्शी देवीप्रसाद, डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, पं. मोतीलाल मेनारिया आदि हैं।[4] प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राचीन समय में प्रचलित प्रायः सभी छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवित (छप्पय), दूहा, तोमर, त्रोटक, गाहा और आर्या आदि छन्द इस ग्रन्थ में मुख्य रूप से प्रयुक्त हुए।[5] प्रस्तुत ग्रन्थ में पृथ्वीराज चौहान के युद्धों, उनकी संधियों, उनके वंशवर्ती, उनके शक्तिशाली राजों के जीवन व क्रिया–कलापों का वर्णन इस ग्रन्थ में मिलता है। यह देव–गाथाओं, रीति–व्यवहारों व मनुष्य के मन के इतिहासों का भी वह एक कोषागार है।[6] हिन्दू परम्परा का पालन करते हुए कवि ने सर्वप्रथम भगवान श्रीगणेश व माँ सरस्वती की वंदना की है, तत्पश्चात् उन्होंने शिव व कृष्ण की महिमा का गुणगान तथा सभी देवताओं व महाकवियों को नमन कर अपने ग्रन्थ को आरम्भ किया है। कवि ने अपने ग्रन्थ में पृथ्वीराज चौहान की वीरता व शौर्य के साथ–साथ उनकी प्रजा पालक प्रकृति का भी वर्णन किया है। प्रस्तुत रचना में कवि ने विभिन्न प्रकार के छन्दों, रसों एवं अलंकारों का प्रयोग कर भाषागत सौन्दर्य में वृद्धि की है। चन्दवरदाई अधिकतर ड़िगल–पिंगल भाषा का प्रयोग करते थे जो कि पुरानी हिन्दी अथवा राजस्थानी के नाम से जानी जाती थी। पृथ्वीराज रासो में कुछ सांगीतिक तत्त्वों का भी समावेश है। इसमें हमें उस समय के प्रचलित वाद्य–यन्त्रों, नृत्य व गायन शैलियों का भी वर्णन मिलता है, जैसे कि जब पृथ्वीराज चौहान स्वयं अपने सामन्तों की मुक्ति के लिए देवताओं से प्रार्थना करते हैं, तो सारे भवन में संगीत की गूंज गूंजने लगती है, इस दृश्य का विवरण कवि ने इस प्रकार किया है–

fu lku njckj] ofTt Hkfj; HkdkjfxA
lgukb lj lx] ofTt >f>; >dkjfxAA
u¶Qhjh uojx] iN oTt nj ofTteA
'yk ly uHk ifj] ofj[k cgy tu xfTt;AA
xk;fr xku r#.kh r#.k] ur gkr ukVd vurA
c)kb Hkb jfxokl eg] dfou cf) ilj xurAA

अर्थात् सभा भवन में नक्कार, भैरी, शहनाई, झांझ, नफेर आदि पांच प्रकार के वाद्यों के बजने से पृथ्वी, पहाड़ और आकाश मंडल में उनकी आवाज़ इस प्रकार भर गई मानों वर्षा ऋतु के बादल गर्जते हों, युवक–युवतियां गाने लगे, अनेक प्रकार के नृत्य और नाटक होने लगे। अतः पुर में बधाई बांटी जाने लगी। कवियों की बुद्धि उसका वर्णन करने को प्रेरित हो उठी।[7]

जब कभी भी राजा युद्ध की घोषणा किया करते थे, तो सारे नगर में युद्ध के नगाड़े व रण–वाद्य बजाए जाते थे। निम्न श्लोक में राजा विजयपाल के राज्य का वर्णन करते हुए संगीत का बहुत मधुर वर्णन किया गया है–

èkfu fulku cg lkn] ukn ljip ctr fnuA
nl gtkj g; p<r] ge ux tfVr lkt fuuAA
xt vl"k xtifr;] egj luk fru vl"kA
bd uk;d dj èkjh] fiukd èkj Hkj jt jC"kgAA

राजा विजयपाल के नगाड़ों की ध्वनि अत्यन्त गम्भीर

स्वर में गूंजती रहती है। उसके यहां नित्यप्रति पंच वाद्य बजते रहते हैं अर्थात् उसके राजद्वार पर नित्यप्रति मंगलसूचक पंच–वाद्य बजते रहते हैं। उसके दस हजार सैनिक घोड़ों पर सवार रहते हैं अर्थात् उसके पास दस हजार अश्वारोही सैन्य हैं। इन घोड़ों का साज स्वर्ण से मंडित और रत्नों से जटित है। उसकी सेना में असंख्य गजराज अर्थात् विशालकाय हाथी है।[8] उसकी हरावली सेना अर्थात् अग्रगामी पदाति (पैदल) सेना की संख्या तीन शंख है। वह अद्वितीय नायक अर्थात् सेनापति है। वह हाथ में शिव के 'पिनाक' नामक धनुष के समान भयंकर और भारी धनुष धारण कर सम्पूर्ण पृथ्वी के राज्य की रक्षा करता है। जिसके अन्तर्गत भृंग (सींगी), तम्भट (खंजड़ी), शंख, मेरी, जयघंटा आदि को लिया गया है। कुछ लोगों ने पंच वाद्य इस प्रकार माने हैं– मृदंग, तन्त्री, मुरली, ताल तथा प्रध्विनित वाद्य। प्राचीन युग में अपने द्वार पर इन पंच वाद्यों को बजवाने का अधिकार केवल राजाओं को रहता था।[9]

jkfg vjkfg e tjh lg
en en rt ijdhj oíA

अर्थात् उनके मंजरी (नूपुर) आरोह–अवरोह युक्त ऐसा शब्द करते है मानो मन्द, मृदु तथा तीव्र स्वरों में प्रकीर (तोते) बोल रहे हों।[10]

jkx NÙkhl dB djrhA
chu cktfr gFFk èkjrhAA

वे छत्तीस राग कण्ठ में (धारण) करती है और वीणा वाद्य को हाथ में धारण करती है।[11]

दोहरा – en enx èkfu lpfj; vfr vyki lèk fonA
rkj f=xke mix lj volj ix ufjnAA

इस समय मृदु–मृदंग ध्वनि संचरित हुई, अलि (सखियों–गायिकाओं) के अलाप, जो सुधा–बिन्दु के समान थे, संचरित हुए और ताल के तीनों ग्राम तथा उपंग (वाद्य) के स्वर भी पंगराज (जयचन्द) के अवसर नृत्य–संगीत–समारोह में संचरित हुए।[12]

ukjkp&

rrÙkFkb rrÙkFkb rrÙkFkb l efM;A
FkFkxFkb FkFkxFkb fojke dke MfM;AA
ljhxilièkfUuèkk èku èku fr jf""k;A
Hkofr tkfr vx rku vx vx yf""k;AA
dyk dyk l Hkn Hkn Hknu eu euA
j.kfd >fd uij cyfr t >u>uAA
èkefM Fkkj ?kfVdk Hkofr Hk"k y"k;kA
>fVÙk "kÙk dl ikl ihr lkg j"k;kAA
tfr xfrLl rkj;k dfVLl Hkn dêjhA
dle lkj vkoèk dle lkj mì uêjhAA
mjlijHk Hk"k j"k l"kj djôlA
frjfli fr"."k fj""k;k lnl nfD[ku fnlAA
ljfr lx xhru èkjfr lklu èkuA
tek; tkx dêjh f=fcèèk up lpuAA

myfê iyfê uêu fQjfô pfô pkguA
fujÙku fujf""k tku oHk ifÙk okguAA
fol"k nl èklin in onu jkx;kA
pØHk"k pØofÙk okfy rk folkt;kAA
mjèèk eèèk eMyh vkjkg jkg pkfyuA
xgfr efÙk nfÙkek eu ejky ekfyuAA
ioh.k okf.k vèèkjh efun en dMyhA
ifr""k Hk"k mèèkjm l Hkkfe rk v"kMyhAA
ryÙkyLlrkfyrk enx èkôu èkuA
vik vik Hk"kfr Hk vifr tkfu ;ktuAA[13]

उन नृतकियों ने 'ततत्तथेई', 'ततत्तथेई' माँडा विधिपूर्वक किया। तदननतर 'थंथुगथेइ', थथुगथेई' करके काम के अन्तर्गत विराम को दंडित किया। उन्होंने 'सा रि ग म प ध नी' आदि ध्वनियों को रखा, प्रस्तुत किया। तानों के जो अंग होते हैं, वे भ्रमित होते समय ज्योति बनकर उनके अंग–अंग में दिखाई पड़ने लगे। कला–कला (नृत्य संगीतादि) के भेद–प्रभेद दर्शकों के मन को भेदने लगे। उनके नूपुर रणंकार और झंकार करके 'झनझन' बोलने लगे। उनकी कटि में लगी हुई थार (कांसे)की, घंटियां उनके नाचने से, घुमड़ने–शब्द करने लगीं और उनकी वेष–लेखा भी भ्रमित होने–चक्रवर्तित होने लगी। उनके लहराते और खुले हुए सुनहले केश–पाशश्लाध्य पीत रेखा (निर्मित करते) थे। यति, गति और ताल के भेद के कटि से काटने (कुशलतापूर्वक इंगित करने) लगीं। कुसुम–शर (कामदेव) के आयुध के सहश कुसुंभी साड़ी पहने हुए वे ओड़ (उड़ीसा के) नृत्य करने लगी। तदनंतर उर (हृदय) से भेष–लेखा को लगाकर और कल शेखर (चन्द्रिका–शिरोभूषण) को कसकर तिरप की तीक्ष्ण (गति युक्त) शिक्षा (कला) प्रदर्शित करती हुई उन्होंने सुन्दर दक्षिण का नृत्य दिखाया। स्वरों के साथ गीत प्रस्तुत करने में वे ध्वनियों का शासन धारण करती (मानती) थी और योग की काटें (कौशलपूर्ण क्रियाएं) प्रदर्शित कर वे त्रिविध नृत्यों का संपादन कर रही थीं। वे उल्टे–पल्टे नृत्य करती हुई फिरकी की भांति घूम कर चकित दृष्टि से देखती थी।

नर्त्तन में निरत वे ऐसी दिखती थीं मानों ब्रह्मपुत्री (सरस्वती) का वाहन (मयूर) हो। विशेष देशों के तथा ध्रुवपद रागों को कहती हुई वे बालाएं चक्रवाक का वेष और चक्रवाक की वृत्ति विशेष रूप से साज रही थी। वह मुग्धा मण्डली ऊर्ध्व आरोह में चलकर जब अवरोह में चलती थी, तो वह ऐसी लगती थी मानो मराल–माला द्युतिपूर्ण मुक्ता–माला ग्रहण कर (चुग) रही हो। वे प्रवीणा की वाणी का आधार लेती हुई जब मुनिन्द्रों की मुद्रा और कुण्डली का प्रदर्शन करती थीं, मृदंग जब 'तलत्तलत' की तालयुक्त सुन्दर ध्वनि कर रहा था, तो ऐसा लगता था मानो भूमि पर इन्द्र का (स्वर्गीय) वेष प्रत्यक्ष उद्भूत हुआ हो। 'अपा अपा' कहती हुई वे ऐसी हो रही थीं, वे आत्म–योग में लग रही हों।

मनउ आवझइ हथ्थ वज्जंति तारा।

दोनों ओर से उनके मुखों में उस बाण का लगना

ऐसा लगता है मानो 'आउझ' (ढोल की जाति के एक वाद्य) पर (दोनों) gkFkk l rky ctk, tk jg gkA

r lfTt ; lj l.o r"kkjkA

,l lHkh r"kkjk dk 'kj lkt jg gA[14]

lgukb uQfje dgfy ;A

jl ohjg ohj pyh fefy ;A

शहनाई, नफीरी और काहल (की सम्मिलित ध्वनि में) वीरों का वीर रस मिल चला।

duud fr ?kV fr ?kV ?kjA[15]

?kVk gh ?kVk dk èku&èku ?keMu yxkA

bÙku lj okftÙk cTtMA

uhlku lknkfr ckt lpxkA

fnlk nl nfD[kUu yg?kh mixkA

rcy rnj txh enxkA

eum uR; ukjí dï ilxkA

ctfg cl fclrkj cg jx jxkA

ftu ekfg dfj lfFFk yXx djxkA

ohj xMhj lk lke exkA

upb bl jhl èkjk tkl xxkA

flèk lgukb Jou mÙkxkA[16]

lu vNNfjv vNN eTtb lvxkA

uQjh uojx lkjx HkjhA

eum uR; ub bn vkjEHk djhA

flèk lkoe>u xu HkjhA

>> vko>> vFFk djjhA

mNNjfg ?kkm ?ku?kV ?kjhA

fpfÙkrk vfèkd oèèk dojhA

mliek "kM uo] uu >Xxh ¼tXxh½A

eum jke jkoUu gFFko yXxhA

इतने ही शूर वाद्यों को बजा रहे थे। निशान (घौंसे) अच्छा शब्द कर रहे थे, दक्षिण दिशा के देश से लब्ध (प्राप्त किए हुए) उपंग थे, तबल, तंदूर तथा जंगी मृदंग थे। ऐसा लगता था मानो ये नारद के नृत्य के प्रसंग में निकले हों। वंशी विस्तृत रूप नाना रंगों में नाना प्रकार से बज रही थी जिन पर मोहित कर कुरंग (मृग) साथ लग गए थे। वीर गुंडीर (गुंड देश के सैनिक) सिंगा बजों के साथ प्रकार शोभित थे। मानों ऐसे शिव नृत्य कर रहे हों जिनके सिर ने गंगा को धारण किया हो। शहनाइयों में गाया जाता हुआ सिंधू राग श्रवणों में इस प्रकार ऊंचा (उत्कृष्ट) प्रतीत होता था मानों शून्य (आकाश) में अच्छ (निर्मल) अप्सराएं अपने सुन्दर अंगों को मज्जित कर रही हों– स्नान करा रही हों। नफीरी, सारंग, भेरी का नया ही रंग था जो ऐसा प्रतीत होता था मानो निजु (बिल्कुल) इन्द्र केलि–आरम्भ (अखाड़े) का नृत्य हो। (नर) सीधे और साउझ[17] इस प्रकार बज रहे थे जैसे गगन में भेरी बज रही हो। झांझ और आवझ भी कड़े हाथों से बजाए जा रहे थे। घनघंट पर हुआ आघात कर स्वर घेर (घुमड़) कर उछछलित हो रहा था। इस कुवेला में रण–वाद्यों से चेतनता अधिक बढ़ रही थी। प्रस्तुत युद्ध के लिए नेत्रों में नौ खण्डों की उपमाएं जागीं, किन्तु मानों दोनों पक्ष राम और रावण के हैं, यही उपमा हाथ लगी।

lgxkb; lhèk= jkx fy ;A

>uudfg Hkfj vud l;AA

अनेक शंत भेरियां झननक रही हैं और शहनाइयां सिंधू राग में लिप्त हो रही हैं।[18] इस प्रकार कवि ने अपने पृथ्वीराज रासो काव्य में संगीत को वर्णित किया है। उसने उस समय के नृत्य और उसकी विभिन्न प्रकार की कलाकारियों, उस समय के भिन्न–भिन्न प्रकार के वाद्यों को भी वर्णित किया है। संगीत में प्रयुक्त होने वाले राग, ताल, ग्राम तथा रागिनियों आदि सभी की चर्चा इस ग्रन्थ में की है। कवि ने अपने छन्दों को भी संगीत के माध्यम से राग, लय व ताल आदि में बांधकर गाया है। यह प्राचनी समय की एक बहुत बड़ी उपलब्धि हमारे सामने है जिसने संगीत को नई दिशाएं प्रदान की हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1.हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, 11वां संस्करण, पृ. 37 2. पृथ्वीराज रासो (पद्मावती समय), डॉ. हरिहरनाथ टण्डन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–3, 8वां संस्करण,पृ. 64 3.पृथ्वीराज रासउ – डॉ. माता प्रसाद गुप्त, प्रकाश– साहित्य सदन, चिरगांव (झांसी), प्रथमवार सं. 2002, पृ. 1684.पृथ्वीराज रासो की विवेचना, श्रीमोहनलाल व्यास शास्त्री, श्रीनाथूलाल व्यास, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, वि.स. 2015 (1959 ई.), पृ. 6145.चन्दवरदायी और उनका काव्य, विपिन बिहारी त्रिवेदी, पृ. 213 हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश6. राजस्थान का पिंगल साहित्य, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, हिन्दी ग्रनथ रत्नाकर, प्राईवेट लि.मि., बम्बई–4, द्वितीय संस्करण, दिसम्बर 19587.पृथ्वीराज रासो, तृतीय भाग, महाकवि चन्दवरदायी, सम्पादक कविराव मोहन सिंह, साहित्य संस्थान, राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर, पृ. 358.पृथ्वीराज रासो (पद्मावती समय), डॉ. हरिहरनाथ टण्डन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–3, अष्टम संस्करण, 1968, पृ. 139.पृथ्वीराज (पद्मावती), पृ. 1310.पृथ्वीराज रासउ, माताप्रसाद गुप्ता, पृ. 9211.वही, पृ. 9912.वही, पृ. 12813.वही, पृ. 13114.वही, पृ. 14415.वही, पृ. 17016.वही, पृ. 175 17.वही, पृ. 176 18.वही, पृ. 216